IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 1, Issue 1, January 2020
Impact Factor: 4.819

हिन्दी जाति की अवधारणा और रामविलास शर्मा : समीक्षात्मक अध्ययन - 1

डॉ. अजय कुमार विन्द
असि. प्रो. हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, नानौता, सहारनपुर
drajaybind@gmail.com

जिस तरह भूगोल, इतिहास, संस्कृति आदि कारकों ने दुनिया में अनेक मानव-समुदायों का निर्माण किया है, उसी तरह भाषा ने भी। इसलिए भाषा को जातीयता (Nationality) का एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है। भाषा का जुड़ाव बहुत भावात्मक और गहरा होता है। हम एक-दूसरे के नजदीक भाषा के माध्यम से ही आते हैं। इसीलिए ज्ञान-विज्ञान के नये अनुसंधान, रचना एवं प्रचार-प्रसार में भाषा की भूमिका अहम् होती है। भाषा में इतनी सामर्थ्य होती है कि हम उसके साहचर्य में धर्म, संस्कृति, देश तक की सीमाओं को भूल जाते हैं। जायसी और रहीम हमारे लिए वैसे ही पुरखे हो जाते हैं जैसे तुलसीदास। सूर की पंक्ति में रसखान आकर बैठ जाते हैं। इस तरह भाषा के आधार पर देश धर्म से भी बड़े सांस्कृतिक समुदाय का निर्माण होता है। जिसमें धर्म-सम्प्रदाय के अलावा ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, लिंग, वर्ण आदि का कोई भेद नहीं रहता। इसी को एक जातीयता के रूप में देखा गया है।

रामविलास शर्मा का मानना है कि 'भाषा के बिना साहित्य नहीं होता और समाज के बिना भाषा नहीं होती।'1 डॉ. शर्मा ने आधुनिक जातियों के निर्माण के लिए चार तत्वों को आवश्यक माना है– सामान्य भाषा, सामान्य प्रदेश, सामान्य आर्थिक जीवन और सामान्य संस्कृति। भाषा के सम्बन्ध में प्रेमचन्द के विचार देखने लायक हैं–'राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है। नदी, पहाड़ और समुद्र

ISSN 2581-9429 IJARSCT

राष्ट्र नहीं बनाते। भाषा ही वह बन्धन है, जो चिरकाल तक राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रहता है और उसका शीराजा (संरचना) बिखरने नहीं देता।'2 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी कहते हैं 'भाषा ही किसी जाति की सभ्यता को सबसे अलग झलकाती है, यही उसके हृदय के भीतरी कलपुर्जों का पता देती है। किसी जाति को अशक्त करने का सबसे सहज उपाय उसकी भाषा को नष्ट करना है।'3 इस देश के अखिल भारतीय निर्माण में 'हिन्दी जाति' ने किस प्रकार भूमिका निभायी, इसकी विस्तार से चर्चा आवश्यक है। बस इतने मात्र से ही समझा जा सकता है कि 1857 की क्रान्ति का नेतृत्व हिन्दी जाति ने ही किया था।जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने समान रूप से हिस्सा लिया। सन् सत्तावन की क्रान्ति हिन्दी जाति की एकता और बलिदान की ऐसी मिसाल है जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता।

'साहित्य का माध्यम भाषा है। जैसे भाषा के बिना साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती, वैसे ही समाज के बिना भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती।'4 जब हम हिन्दी साहित्य का इतिहास कहते हैं तो निश्चित रूप से हमारा आशय हिन्दी भाषी जनता के साहित्य से ही होता है। यानी, उस जनसमुदाय का साहित्य जो हिन्दी बोलता है और जिसे सामान्यतः हिन्दी भाषी कहा जाता है। यह हिन्दी भाषी होना ही वास्तविक रूप में हिन्दी जाति का एक अंग होना है। जिस प्रकार बंगाल-निवासी बाँग्ला भाषी बंगाली, महाराष्ट्र निवासी मराठी भाषी मराठी और तमिलनाडु के निवासी तमिल भाषी लोग तमिल कहलाते हैं। ठीक उसी प्रकार हिन्दी भाषी प्रदेश में रहने वाले और हिन्दी बोलने और उसमें साहित्य-रचना करने वाले लोग हिन्दी हैं। इस अर्थ में यह 'हिन्दी' होना ही हिन्दी जातीयता है। इस प्रकार हिन्दी भाषा भी है और जातीयता भी। भाषा और जाति का संबंध ऐसा ही होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल और निराला से लेकर रामविलास शर्मा तक ने 'जाति' (Nationality) शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि

जात-पाँत के लिए भी 'जाति' शब्द का प्रयोग होता है, पर हम यहाँ 'जाति' शब्द का प्रयोग उसके ठीक इसी वैज्ञानिक अर्थ में कर रहे हैं, जात-पाँत के अर्थ में नहीं।

भारत 'राष्ट्र' में बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, तमिल, मलयाली, हिन्दी आदि अनेक जातियों के लोग निवास करते हैं। इन अलग-अलग जातियों से मिलकर ही हमारी भारतीय 'राष्ट्रीयता' बनी है। 'राष्ट्रीय' में 'जातीयता' समाप्त नहीं होती, भारत राष्ट्र में उसका अस्तित्व बना रहता है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य आवास भूमि और सामान्य भाषा को हम 'जाति' के दो प्रमुख लक्षण मान सकते हैं। इसके साथ ही हम सामान्य संस्कृति और सामान्य ऐतिहासिक परम्परा, ये दो लक्षण और मान सकते हैं। इस दृष्टि से विचार करने पर यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि प्रत्येक भाषा का साहित्य उसका जातीय साहित्य होता है। उदाहरण के लिए हिन्दी साहित्य का अर्थ हुआ जाति का साहित्य। अंग्रेजों तथा अमेरिकियों, दोनों की भाषा अंग्रेजी है, पर दोनों के अपने साहित्य के इतिहास अलग-अलग हैं। अंग्रेजी की तरह की स्पेनिश, फ्रेंच और पोर्तगीज भाषाएँ भी स्पेन, फ्रांस और पुर्तगाल के बाहर अनेक लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में बोली जाती हैं। वहाँ के निवासियों द्वारा इन यूरोपीय भाषाओं में साहित्य-रचना की जाती है, लेकिन इनके साहित्य का उल्लेख स्पेनिश, फ्रेंच और पोर्तगीज साहित्यों के इतिहास में कहीं नहीं मिलता। भारत में ही बहुत सारे लोग अंग्रेजी में साहित्य-रचना करते हैं, पर उन्हें अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में कोई जगह नहीं मिलती। सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस आदि देशों के लोग हिन्दी में साहित्य रचना करते हैं लेकिन उन्हें हम हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्थान नहीं देते। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक भाषा का साहित्य उस भाषा का जातीय साहित्य होता है और उस भाषा का प्रयोग करने वाली वह जाति-विशेष ही उस साहित्य की रचना करती है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 1, Issue 1, January 2020 Impact Factor: 4.819

डॉ. शर्मा की आलोचना में 'जनता' और 'जाति'—ये दो शब्द वैसे ही अविशिष्ट हैं–जैसे 'साहित्य' और 'भाषा'। डॉ. शर्मा से पूर्व भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी और आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के जातीय स्वरूप को पहचाना था, लेकिन उनकी पहचान परखने और अन्वेषित करने का काम डॉ. शर्मा ने किया। जातीय रचनाकार होने को वे साहित्यिक महानता का अनिवार्य लक्षण मानते हैं। वे लिखते हैं–'महान साहित्यकार विदेशी भाषा में नहीं, अपनी जातीय भाषा में साहित्य रचते हैं। सबसे पहले उनकी दृष्टि के सामने उनकी जाति के लोग होते हैं, इसलिए उनका जातीय होना अनिवार्य है।'5 जीवन सिंह ने डॉ. शर्मा की जातीय अवधारणा पर सम्यक् विचार प्रकट करते कहा है–'डॉ. रामविलास शर्मा हिन्दी-जाति की ज्ञान-व्यवस्था के एक ऐसे आधुनिक जातीय विचारक हैं, जो अपने समय को समग्रता में देखकर अपने निष्कर्ष निकालते हैं। रामविलास जी ने हिन्दी जाति के हर ज्ञानात्मक कोने में झाँकने की कोशिश की है। वे उन मनीषियों और युगपुरुषों की श्रेणी में हैं, जो न केवल अपने सिद्धान्त कथनों से अपने समय को प्रभावित करते हैं वरन् अपने सदाचरण से भी।'6

डॉ. शर्मा को यह बात आजीवन सालती रही कि 'भारत में बंगाली, पंजाबी, तमिल, मराठी, गुजराती, तेलगू इत्यादि जातियों का निर्माण तो हो सका और ये राजनीतिक इकाई के रूप में विकसित हो सकीं लेकिन 'हिन्दी प्रदेश' में जातीय बोध का अभाव रहा, जिसके चलते यह राजनीतिक रूप से विभक्त है। मगध से लेकर मालवा तक जातीय भाषा के रूप में हिन्दी व्यवहृत है। विराट क्षेत्रफल और विशाल जनसंख्या वाला यह क्षेत्र 'मध्य देश', 'हिन्दुस्तान' या 'हिन्द' के रूप में जाना जाता रहा है। प्राचीन काल से ही राष्ट्रीय निर्माण में इसने निर्णायक भूमिका निभाई है। इसी क्षेत्र में ऋग्वेद, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र, उपनिषदों इत्यादि की रचना हुई। मौर्य और गुप्त साम्राज्य यहीं स्थापित हुए। कालिदास और भवभूति जैसी प्रतिभाएँ यहीं जन्मीं।7'इसी क्षेत्र के तुलसी, तानसेन और ताजमहल विश्व संस्कृति को अनुपम उपहार हैं।'8 'इसी क्षेत्र में पाटलिपुत्र, काशी, मथुरा और उज्जयिनी जैसे नगर

विकसित हुए जिन्होंने प्राचीन काल से ही विराट क्षेत्र के जनपदों को परस्पर सम्बद्ध रखने के साथ-साथ उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु का काम किया है। यहीं उत्तरकाल में दिल्ली और आगरा जैसे नगर विकसित हुए जिन्होंने प्रशासनिक एवं व्यावसायिक केन्द्र के रूप में समूचे भारत को सूत्रबद्ध किया।'9 'आशय यह है कि इसी हिन्दी प्रदेश ने भारत राष्ट्र के निर्माण और भारतीय संस्कृति के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई है।'10 लेकिन यह क्षेत्र 'पिछड़ा माना जाता है और भारत के अंग्रेजी अखबार इसे 'काउबेल्ट' के रूप में अभिहित करते हैं।'11 जीवन सिंह का मानना है–'डॉ. रामविलास शर्मा, केवल हिन्दी साहित्य के विचारक नहीं हैं, वे हिन्दी जाति के विचारक हैं जो हिन्दी के माध्यम से अपनी भाषा के चिंतन पक्ष को अधुनातन और नये सांस्कृतिक मूल्यों से अर्थवान् बनाते हैं। किसी भाषा की जातीय समृद्धि तभी हो पाती है, जब उसमें मौलिक रूप में अद्यतन ज्ञान-सर्जना हो पायी हो। रामविलास जी की यह सबसे बड़ी भूमिका है कि वे कोटि जनों की भाषा को अपनी सत् ज्ञान साधना से चिंतन समृद्ध करते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखते हुए भी उसका उपयोग, अपनी जातीय भाषा और संस्कृति को ज्ञान-सम्पन्न बनाने के लिए करते हैं।'12

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1-सं. श्याम कश्यप, हिन्दी साहित्य का इतिहास पुनर्लेखन की समस्याएँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1994, पृ. 27

2-वसुधा-51 : जुलाई-सितम्बर 2001, रामविलास शर्मा विशेषांक-सं. विश्वनाथ त्रिपाठी, अरुण प्रकाश, भदभदा रोड़, भोपाल, मध्य प्रदेश, पृ. 177

3-वही, पृ. 177

4--सं. श्याम कश्यप, हिन्दी साहित्य का इतिहास पुनर्लेखन की समस्याएँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1994, पृ. 38,

5-डॉ. रामविलास शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, खण्ड-2, किताबघर, नई दिल्ली, पृ. 552

6-कल के लिए - अप्रैल-जून 2002, अंक-2, रामविलास शर्मा विशेषांक-सं. जयनारायण, अनुभूति विकास भवन, बहराइच, उत्तर प्रदेश

7-डॉ. रामविलास शर्मा, भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, खण्ड-1, किताबघर, नई दिल्ली, पृ. 8-10

8-वही, खण्ड-2, पृ. 199

9-वही, खण्ड-1, पृ. 411-12

10-वही, पृ. 9-10

11-वही, पृ. 9-10

12-रामविलास शर्मा, कल के लिए : अप्रैल-जून 2002, अंक-2, विशेषांक-सं. जयनारायण, अनुभूति विकास भवन, बहराइच, उत्तर प्रदेश, पृ. 55